(बीसवीं शताब्दी के मध्य में एक रूसी गांव में घटी इस मार्मिक कहानी में, एक स्कूल टीचर व्याकरण की उबाऊ श्रेणियों के अंदर छिपे समृद्ध अनुभवों को एक बार फिर से खोजती है.)

विंटर ओक (शीतकालीन बाँझ)

योरी नागिबिन

रात भर भारी बर्फबारी हुई थी. उवरोव्का से स्कूल की ओर जाने वाली संकरी पगडंडी पर केवल रुक-रुक कर ही आने वाली कोई छाया दिखाई दे रही थी. स्कूल टीचर सावधानी से चल रही थी, बर्फ के खतरनाक होने की स्थिति में वो अपने फर के जूतों को वापस खींचने के लिए तैयार थी.

स्कूल पहुँचने के लिए अब केवल आधा मील का रास्ता ही बचा था. टीचर ने एक छोटा फर-कोट पहन रखा था. फिर उसने अपने सिर को एक हल्के ऊनी रूमाल से ढँक लिया. ठंड तेज़ थी, और हवा के साथ ताज़ी स्नो की बौछार भी आ रही थी, जिसने उसे सिर से पैर तक तर-बतर कर दिया था. लेकिन चौबीस वर्षीय स्कूल की टीचर को वो पसंद था - ऐसी ठंड जो उसकी नाक और गालों में चुभे, और हवा की कच्ची चुभन, जो कोट के नीचे घुसे. हवा की ओर पीठ करके, उसने अपने नुकीले जूतों के, बर्फ पर गढ़े निशान देखे, जो किसी छोटे जानवर के पदचिन्ह जैसे लग रहे थे. उसे वे निशान भी पसंद आए.

जनवरी की सुबह की तेज चमक ने, उसे अपने जीवन और स्वयं पर आनंदपूर्ण चिंतन को मज़बूर किया था. वो अभी दो साल पहले ही कॉलेज से निकली थी और अब उसकी प्रतिष्ठा एक प्रतिभाशाली, अनुभवी टीचर के रूप में थी. उवरोव्का, कुज़्मिंकी, केमी यार और आसपास की सभी बस्तियों के लोग उसे जानते थे, और उसे सम्मानपूर्वक अन्ना वासिलिवेना कहकर संबोधित करते थे.

सामने से एक आदमी खेतों को लांघता हुआ आ रहा था. "क्या होगा अगर वो पगडंडी से नहीं हटा?" अन्ना वासिलिवेना ने भय के साथ सोचा. "पगडंडी दो लोगों के लिए बहुत संकरी थी - बस एक कदम बहका, और फिर वो गर्दन तक बर्फ की गहराई में फंस जाएगी." लेकिन उसे अपने दिल में

यह पता था कि जिले में ऐसा कोई भी ऐसा आदमी नहीं था जो उवरोव्का की स्कूल-टीचर को रास्ता नहीं देगा.

जब वे एक-दूसरे के करीब आए तो उसने पहचाना कि वो आदमी घोड़ों के फार्म पर काम करने वाला मज़दूर फ्रोलोव था.

"सुप्रभात, अन्ना वासिलिवेना!" फ्रोलोव ने अपनी फर वाली टोपी उतारते हुए और छोटे-छंटे बालों को दिखाते हुए कहा.

"तुमने अपनी टोपी क्यों उतारी? ज़बरदस्त ठंड है! क्या तुम्हें ठंड नहीं लग रही है?"

फ्रोलोव, जल्दी से जल्दी टोपी को फिर से पहनने को उत्सुक था, लेकिन अब टीचर के शब्दों को सुनने के बाद उसने टोपी पहनने में थोड़ा विलंब कर दिया. भेड़ की खाल का कोट उसके पतले,ताकतवर शरीर पर बहुत फब रहा था. उसके हाथ में एक मुड़ी हुई पतली डंडी थी जिससे वो अपने जूते पर जमी बर्फ को पीट रहा था.

"मेरा ल्योशा कैसा है?" उसने शालीनता से पूछा. "क्या वो अभी भी बहुत शरारत करता है?"

"बेशक, वो है... सभी स्वस्थ बच्चे शरारती होते हैं. वो एक सामान्य बात है अगर वे सीमाओं का उल्लंघन न करें," अन्ना वासिलिवेना ने शैक्षणिक दूरदर्शिता का परिचय देते हुए उत्तर दिया.

फ्रोलोव मुस्कुराया.

"ल्योशा एक शांत लड़का है, वो अपने पिता की तरह ही है!"

फ्रोलोव, पगडण्डी से किनारे की ओर बढ़ा. घुटनों तक बर्फ में डूबते हुए वो एक बारह साल के स्कूली लड़के जितना छोटा हो गया. अन्ना वासिलिवेना ने विनम्रतापूर्वक उसकी ओर सिर हिलाया और वो अपने रास्ते चल दीं.

दो मंजिली लाल ईंटों से बनी स्कूल की इमारत, चौड़ी खिड़कियों के साथ राजमार्ग के पास एक छोटी बाड़ के पीछे खड़ी थी. सुबह का प्रकाश, सड़क पर बिखरी स्नो पर, दीवारों का लाल प्रतिबिंब फेंक रहा था. पूरे जिले के बच्चे उस स्कूल में पढ़ने आते थे - आसपास के गांवों के, स्टड फार्म के, तेल-श्रमिकों वाले सैनिटोरियम के और दूर-दराज़ की कोयला मज़दूरों की बस्ती के बच्चे भी. टोपियाँ, हुड और रूमाल लपेटे, कान पर मफलर बांधे बच्चे, राजमार्ग की दोनों दिशाओं से स्कूल आते थे.

"सुप्रभात, अन्ना वासिलिवेना!"

बच्चों ने एक अंतहीन प्रवाह में टीचर का अभिवादन करते. उनकी आवाज़ कभी घंटी की तरह स्पष्ट होती, पर कभी-कभी वो रूमाल और स्कार्फ से दब जाती थी और मुश्किल से ही सुनाई देती थी.

अन्ना वासिलिवेना का पहली क्लास, कक्षा 5-ए में थी. उसमें बारह-तरह साल के बच्चे थे. जब अन्ना वासिलिवेना ने कक्षा में प्रवेश किया तो स्कूल की घंटी पहली क्लास के शुरू होने का आगाज़ कर रही थी. विद्यार्थियों ने उठकर एक सुर में टीचर का स्वागत किया और फिर वे अपनी-अपनी जगहों पर बैठ गए. बच्चों को शांत होने में कुछ समय लगा. मेज़ों के ढक्कनों के पटकने, बेंचों के चरमराने की आवाज़ें हुईं. साफ़ ज़ाहिर था की बच्चे सुबह की लापरवाह आज़ादी को जल्दी विदाई नहीं देना चाहते थे.

"आज हम व्याकरण की पढ़ाई को ज़ारी रखेंगे."

कक्षा में सन्नाटा छा गया. अब राजमार्ग पर दौड़ती हुई भारी लॉरी की गड़गड़ाहट स्पष्ट सुनाई देने लगी!

अन्ना वासिलिवेना को याद आया कि पिछले साल इस पाठ से पहले वो कितनी घबराई हुई थीं. जैसे परीक्षा से पहले कोई स्कूली छात्रा, बार-बार दोहराती है उन्होंने भी वैसे ही संज्ञा की परिभाषा बार-बार दोहराई थी. उनके दिल में यह भी डर था - क्या बच्चे उसे समझ पाएंगे!

उस स्मृति ने उनके होठों पर एक मुस्कुराहट ला दी. उन्होंने अपने घने बालों में हेयरक्लिप लगाया, और फिर बड़े आत्मविश्वास के साथ एक सहज, शांत स्वर में शुरुआत की. "संज्ञा वो शब्द होता है जिसका उपयोग किसी चीज़ को नाम देने के लिए किया जाता है. व्याकरण में वस्तु वो व्यक्ति होता है जिससे तुम अपने प्रश्नों का उत्तर पूछते हो : वो क्या है? या, 'वो कौन है?'. उदाहरण के लिए, वो कौन है? एक छात्र. या, वो क्या है? एक किताब..."

"क्या मैं अंदर आ सकता हूं?"

आधे खुले दरवाज़े में, फ़टे गीले जूते पहने एक छोटी सी आकृति खड़ी थी. भीषण ठंड से उसका चेहरा लाल हो गया था और चमक रहा था. उसकी भौहें पर सफेद स्नो चिपकी थी.

"तुमने आज फिर देरी की, सवुस्किन?" अधिकांश युवा टीचरों की तरह, अन्ना वासिलिवेना भी सख्त होना चाहती थीं. लेकिन इस बार उनका प्रश्न लगभग निराशाजनक लग रहा था.

टीचर के शब्दों को प्रवेश की अनुमति समझकर सवुस्किन तेजी से अपनी सीट पर जाकर बैठ गया. अन्ना वासिलिवेना ने देखा कि लड़का अपना बैग डेस्क के ढक्कन के नीचे रख रहा था और बिना अपना सिर घुमाए वो अपने पड़ोसी से कुछ पूछ रहा था.

सवुस्किन के देर से आने से अन्ना वासिलिवेना परेशान हुईं. उस परेशानी ने उनके अच्छी शुरुआत वाले दिन को बर्बाद कर दिया था. भूगोल की टीचर - एक छोटी सी मुरझाई हुई बूढ़ी औरत, जो दिखने में रात के पतंगे जैसी थीं - ने भी अन्ना से, सवुस्किन के अक्सर देरी से आने की शिकायत की थी. वो अन्य चीज़ों के बारे में भी शिकायतें करती थीं - विद्यार्थियों की लापरवाह की, और उनके मचाए शोर की, ...

"सुबह का पहला पाठ अक्सर बहुत कठिन होता है!" अन्ना ने आह भरी.

वो शायद उन अयोग्य टीचरों के लिए ज़रूर भयानक होता हो जो विद्यार्थियों के लिए पाठ को रुचिकर नहीं बना पाते हों, अन्ना वासिलिवेना ने आत्मविश्वास से सोचा और फिर उन्होंने बूढ़ी टीचर के सामने पीरियड के अदला-बदली का प्रस्ताव रखा. फिर अन्ना को अपराधबोध महसूस हुआ, क्योंकि शायद बूढ़ी टीचर ने अन्ना के प्रस्ताव में छिपी चुनौती को भाप लिया था...

"क्या तुम्हें सब कुछ समझ में आया?" अन्ना वासिलिवेना ने बच्चों से पूछा.

"एकदम स्पष्ट!" बच्चों ने एक कोरस में उत्तर दिया.

"ठीक है... फिर तुम मुझे उनके कुछ उदाहरण दो."

एक क्षण के लिए सन्नाटा छा गया, फिर किसी ने अनिश्चित स्वर में कहा, "बिल्ली."

"तुमने बिल्कुल सही कहा," अन्ना वासिलिवेना ने कहा, यह याद करते हुए कि पिछले साल भी बच्चों ने "बिल्ली" ही कहा था.

उसके बाद धड़ल्ले से बच्चे उदहारण देने लगे: "खिड़की!...मेज!...घर!...सड़क!...

"सही," अन्ना ने दोहराया. पूरी कक्षा उत्साह और आनंद से भर गई.

अन्ना आश्चर्यचकित थीं कि स्कूली बच्चों को अपनी चिरपरिचित वस्तुओं का एक नया पक्ष खोजने में कितनी संतुष्टि मिली थी, मानो वे उन चीज़ों को एक नई, असामान्य रोशनी में देख रहे हों. शुरू के कुछ उदाहरण रोज़मर्रा की सबसे जानी-पहचानी वस्तुएं ही थीं : गाड़ी.. ट्रैक्टर... बाल्टी.. घोंसला...और फिर सबसे पिछली डेस्क पर बैठी नन्हीं वस्याता अपनी महीन आवाज़ में यह शब्द दोहराती रही: "मुर्गी...मुर्गी...मुर्गी."

लेकिन फिर किसी ने डरते हुए कहा: "शहर..."

"बहुत अच्छा," अन्ना ने उन्हें प्रोत्साहित किया.

"सड़क, कविता, नाटक..."

"बिल्कुल सही," अन्ना वासिलिवेना ने कहा, "मैं साफ़ देख सकती हूं कि अब तुम सब लोग समझ गए हो."

आवाज़ें कुछ हद तक कम हो गईं, पर केवल छोटी वस्याता अभी भी पीछे से "मुर्गी" का जाप करती रही. उसके बाद जैसे सवुस्किन अचानक अपने सपनों से जागा हो, वो ऊँचे स्वर में बोला: "विंटर ओक!"

सब बच्चे हंसने लगे.

"शांत!" अन्ना ने अपने हाथ की हथेली को ज़ोर से डेस्क पर मारते हुए कहा.

"विंटर ओक!..." सवुस्किन ने बच्चों की हँसी और शिक्षक के चिल्लाने से बेखबर हुए फिर से दोहराया. उसके बोलने का अंदाज़ कुछ अजीब था. ऐसा लग रहा था जैसे वे शब्द उसके दिल की गहराई से बाहर निकले थे, जैसे वो कोई ऐसा रहस्य साझा कर रहा था जिसे उसकी आत्मा अब अंदर रखने में असमर्थ थी.

गुस्से में और सवुस्किन की बात को न समझते हुए, अन्ना वासिलिवेना ने मुश्किल से अपनी चिड़चिड़ाहट छिपाई और बोलीं:

"'विंटर' क्यों? बस 'ओक' ही काफी होगा."

"सिर्फ 'ओक' कुछ नहीं होता! 'विंटर ओक' यह एक वास्तविक संज्ञा है!" लड़के ने उत्तर दिया.

"अपनी सीट पर बैठो, सवुस्किन. देखो, स्कूल देरी से आने से यही होता है? 'ओक' एक संज्ञा है, लेकिन मैं यह नहीं समझ पाई कि उसमें 'विंटर' भला क्या कर रहा है. हमने अभी 'विंटर' के बारे में कुछ सीखा भी नहीं है. अच्छा, तुम खाने की छुट्टी में कॉमन रूम में आना."

"तब तुम्हें सर्दी महसूस होगी!" एक लड़का पीछे से फुसफुसाया.

सवुस्किन बैठ गया. वो खुद पर मुस्कुराता रहा. टीचर के शब्दों से वो बिल्कुल भी विचलित नहीं हुआ. अन्ना वासिलिवेना को वो एक कठिन लड़का लगा.

पाठ जारी रहा...

जब सवुस्किन कॉमन रूम में आया तो अन्ना वासिलिवेना ने कहा "बैठो." लड़का निश्छल आनंद के साथ नरम कुर्सी पर बैठ गया और वो कई बार कुर्सी की स्प्रिंग्स पर उछला.

"अच्छा मुझे सच-सच बताओ कि तुम हमेशा स्कूल देरी से क्यों आते हो!"

"मैं नहीं जानता, अन्ना वासिलिवेना," उसने एक वयस्क की तरह आश्चर्य जताते हुए कहा, "मैं स्कूल शुरू होने से एक घंटा पहले अपने घर से निकलता हूं."

किसी छोटे मामले में भी सत्य की गहराई तक पहुँचना कितना कठिन होता है! कई बच्चे सवुस्किन से भी दूर रहते थे, लेकिन स्कूल से एक घंटे से अधिक पैदल दूरी पर कोई भी बच्चा नहीं रहता था.

"क्या तुम कुज़्मिंकी में नहीं रहते हो?"

"नहीं, सेनेटोरियम में."

"और क्या यह कहते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती कि स्कूल आने में तुम्हें एक घंटे से ज़्यादा वक्त लगता है? अस्पताल से राजमार्ग तक पंद्रह मिनट से ज़्यादा का समय नहीं लगेगा, और वहां से तुम आधे घंटे में आराम से स्कूल पहुँच सकते हो."

"लेकिन मैं कभी भी राजमार्ग नहीं लेता हूँ. मैं सीधे जंगल के शॉर्टकट से आता हूँ," सवुस्किन ने पूरी ईमानदारी से कहा.

"देखो, वहां से कभी नहीं आना," अन्ना ने उसे हिदायत दी. बच्चे झूठ क्यों बोलते हैं? सवुस्किन ने सीधे यह क्यों नहीं कहा: "माफ करें अन्ना, मैं अन्य लड़कों के साथ स्नोबॉल खेल रहा था और..." या फिर वो कुछ और सरल और सीधी-सच्ची बात क्यों नहीं कहता. लेकिन सवुस्किन ने और कुछ भी नहीं कहा. वो टीचर को केवल अपनी बड़ी, भूरी आँखों से घूरता रहा जैसे उसकी नज़र कह रही हो: "ठीक है, बताएं,आपको और क्या चाहिए?"

"देखो मुझे यह बात ठीक नहीं लगती, सवुस्किन! मुझे उसके बारे में तुम्हारे माता-पिता से मिलना होगा."

"देखें, मेरी केवल माँ ही हैं, अन्ना वासिलिवेना," सवुस्किन ने हल्के से कहा.

अन्ना शरमा गयीं. वो सवुस्किन की माँ - "शॉवर नर्स" के बारे में सोचने लगीं, क्योंकि बेटा अपनी माँ को उसी नाम से बुलाता था. वो सेनेटोरियम में मरीज़ों को स्नान कराती थीं. वो एक थकी हुई महिला थीं जिनके हाथ हमेशा गर्म पानी में डूबे रहने के कारण सफेद और पिलपिले हो गए थे, और वे ऐसे दिखते थे जैसे वे रुई के बने हों. पति की युद्ध में मृत्यु के बाद सवुस्किन की माँ अकेले रहती थीं और अपने चार बच्चों का जैसे-तैसे पाल-पोसती थीं.

निश्चित रूप से सवुस्किन की माँ की ज़िंदगी में काफी परेशानियां थीं और शायद इसलिए वोअपने बेटे के व्यवहार को लेकर इतनी चिंतित नहीं थी. लेकिन फिर भी अन्ना उनसे ज़रूर मिलना चाहती थीं.

"मुझे तुम्हारी माँ से जाकर मिलना होगा."

"ज़रूर, अन्ना वासिलिवेना, माँ आप से मिलकर बहुत खुश होंगी!"

"मुझे उसमें कुछ संदेह है. आज तुम्हारी माँ किस शिफ्ट में हैं?"

"दूसरी पाली में. आज उनकी शिफ्ट तीन बजे से शुरू होगी..."

"ठीक है. आज मैं दो बजे अपना काम ख़त्म कर लूंगी. स्कूल ख़त्म होने के बाद मैं तुम्हारे साथ घर चलूंगी."

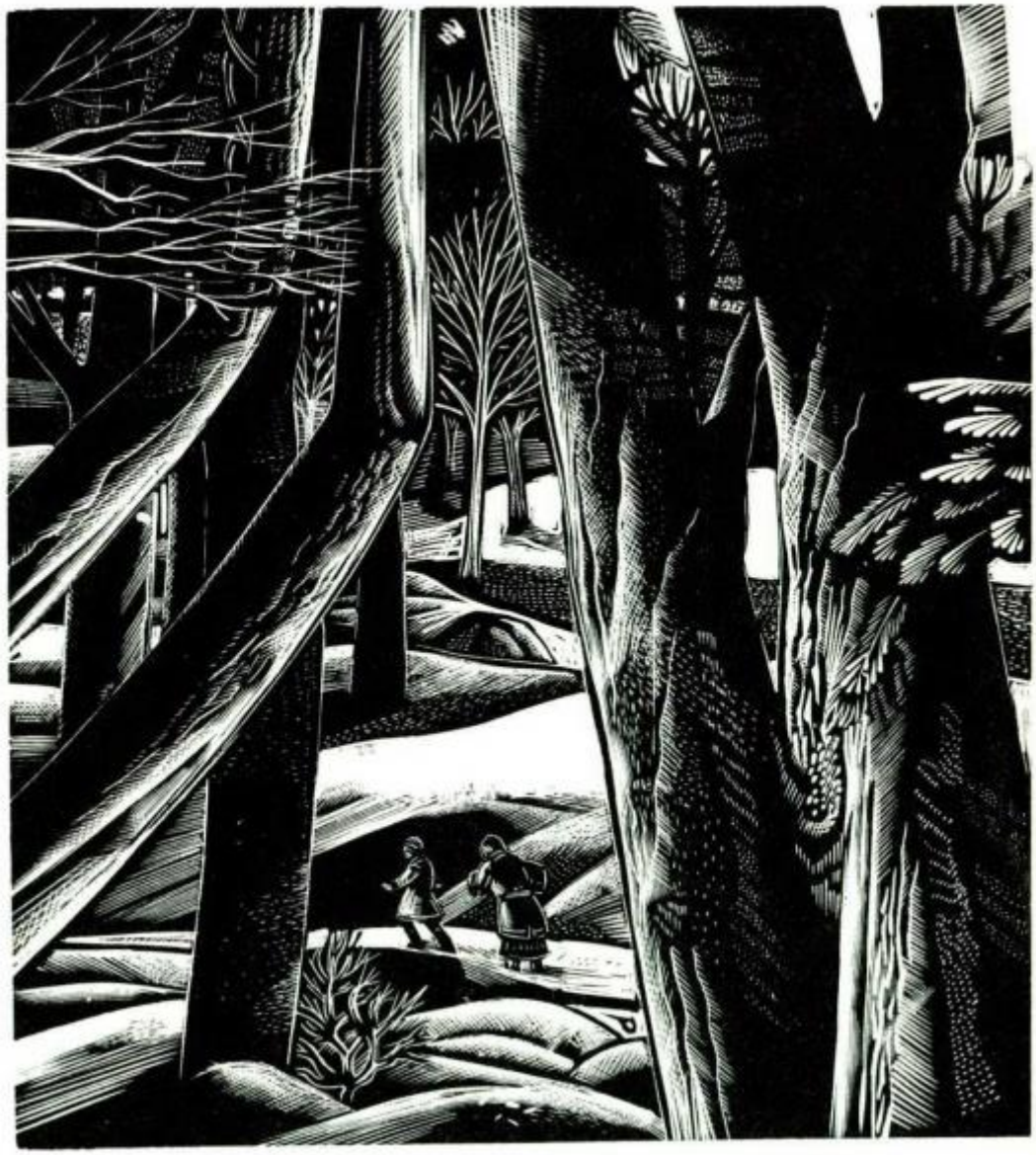

सवुस्किन जिस रास्ते से अन्ना वासिलिवेना को लेकर गया, वो स्कूल के मैदान के पीछे से शुरू होता था. जैसे ही उन्होंने जंगल में कदम रखा और बर्फ से लदी देवदार की शाखाओं को पार किया उन्होंने खुद को शांति की एक मंत्रमुग्ध दुनिया में पाया. एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ते हुए, मैगपाई पक्षी और कौवे शाखाओं को हिलाते थे, चीड़ के शंकु फलों को गिराते थे, और कभी-कभी सूखी, पतली टहनियों को तोड़ते भी थे. लेकिन उससे कुछ भी आवाज़ पैदा नहीं हो रही थीं.

चारों तरफ सफेदी छाई हुई थी. आकाश के नीले कैनवास पर केवल भोजपत्र के पेड़ों के तनों पर बनी काली रेखाएं दिखाई दे रही थीं, जैसे उन्हें काली इंडिया इंक से उकेरा गया हो.

रास्ता, एक जमे हुए नाले के किनारे-किनारे घूमता हुआ आगे बढ़ रहा था. कभी पगडंडी ऊँची उठ जाती थी और कभी ढलान का दामन पकड़ लेती थी. कभी-कभी पेड़ों के झुरमुटे गायब हो जाते थे और धूप से नहाए घास के मैदान खुल जाते थे. वहां खरगोशों के पदचिन्हों के आड़े-तिरछे निशान

किसी घड़ी की चेन जैसे दिखते थे. उन्हें ऐसे पदचिन्ह भी मिले जो तिपतिया घास के पत्ते के आकार से मिलते जुलते थे. वे ज़रूर किसी बड़े जानवर के थे. वे पदचिन्ह सबसे सघन जंगल में जाकर लुप्त हो गए थे.

"वो बारहसिंघे के पदचिन्ह हैं!" सवुश्किन ने अन्ना की ओर देखते हुए कहा. "लेकिन डरें नहीं," उसने टीचर की आँखों में अनपूछे प्रश्नों को देखकर कहा.

"क्या तुमने बारहसिंघे को कभी देखा है?" अन्ना ने पूछा.

"जीवित बारहसिंघा? मुझे वो सौभाग्य अभी तक नहीं मिला," सवुस्किन ने एक आह भरी. "नहीं... लेकिन मैंने उसका मल देखा है."

"क्या?"

"हाँ, उनका गोबर," सवुस्किन ने शर्मिंदगी से कहा.

मुड़े हुए सफेद मजनू के पेड़ों के बने तोरणद्वार के नीचे फिसलते हुए, रास्ता फिर से नाले की ओर चला गया. कई स्थानों पर जल की धारा बर्फ की मोटी चादर से ढकी हुई थी, कुछ स्थानों पर चिकनी बर्फ चमक रही थी, और यहाँ-वहाँ, बहते पानी के काले धब्बे, कुटिल आँखों जैसे नज़र आ रहे थे.

"वहां पर बर्फ़ क्यों नहीं जमी है?" अन्ना ने पूछा.

"वहां पर गर्म झरने भी हैं. देखें, वो रहा एक गर्म झरना."

पानी पर झुकते हुए, अन्ना ने नीचे से एक पतला धागा ऊपर उठते देखा जो सतह तक आते ही एक बुलबुला बनकर फूट गया. वो सफ़ेद फूलों और नाज़ुक डंठल वाली, घाटी के लिली फूल की तरह लग रहा था.

"यहाँ बहुत सारे गर्म झरने हैं," सवुस्किन ने बड़े उत्साह के साथ कहा. "इस वजह से यह नाला कभी पूरी तरह से नहीं जमता है."

वो एक अन्य हिस्से में पहुंचे जहाँ पानी जमा नहीं था. लेकिन वहां का पानी एकदम काला, लेकिन पारदर्शी था.

अन्ना ने पानी में मुट्ठीभर स्नो गिराई. वो स्नो पिघली नहीं, पर वो डूबी और मोटी हो गई और फिर पानी में हरी जेली के रंग की खरपतवार जैसे फैल गई. इससे अन्ना इतनी खुश हुई की उन्होंने फिर और अधिक स्नो पानी में धकेली. उन्हें तब बड़ी ख़ुशी हुई जब स्नो के एक बड़े थक्के ने एक विशेष और विचित्र आकार धारण किया. वो इस खेल में इतनी मगन हो गईं कि उन्होंने इस बात का ध्यान ही नहीं रहा कि सवुस्किन अब काफी आगे बढ़ चुका था. वो नदी के ऊपर लटकी हुई एक

शाखा पर बैठा उनका इंतजार कर रहा था. वहां पर पानी की सतह, बर्फ की एक परत से ढकी हुई थी जिस पर प्रकाश की सरकती परछाइयाँ थिरक रही थीं.

"देखो, यहाँ बर्फ की परत इतनी पतली है, कि नीचे पानी की धारा भी दिखाई दे रही है!" अन्ना ने लड़के के पास आते हुए कहा.

"नहीं, अन्ना वासिलिवेना, यह वो टहनी है जिसपर मैं बैठा हूँ. वो हिल रही है और उसकी परछाई बर्फ पर थिरक रही है."

अन्ना शरमाईं. ऐसा लगा कि अगर वो जंगल में अपनी जुबान पर ताला लगाकर रखें तो ही बेहतर होगा.

सवुस्किन आगे बढ़ता गया. वो कभी-कभी मुड़कर चीज़ों को अपनी पैनी आँखों से देखता था. अन्ना लगातार उसके पीछे-पीछे चलती रहीं.

टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी उन्हें आगे और आगे ले गई. ऐसा लगता था जैसे पेड़ों के झुरमुटों, ऊंचे बर्फ के टीलों, जादुई ख़ामोशी और धूप की अठखेलियों का वहां एक अंतहीन खेल था.

अचानक उन्हें सामने की ओर एक नीला-सफ़ेद धब्बा दिखाई दिया. पेड़ों की संख्या अब कम होने लगी थी. पगडंडी एक बेर की झाड़ी से मुड़कर उन्हें एक सूरज की धूप से नहाए बड़े मैदान में ले गई. वहां मैदान के बींचोबीच एक पुराना बाँझ का पेड़ किसी भव्य, पुराने चर्च जैसे खड़ा था. उसकी टहनियां मैदान में दूर-दूर तक फैली थीं. उसकी छाल की झिरियों में भरी सफ़ेद स्नो, चांदी की कलमकारी जैसे दिख रही थी. पेड़ के पुराने सूखे पत्ते अभी भी नहीं गिरे थे और पेड़ के पत्ते ऊपर से नीचे तक स्नो से लदे थे.

"विंटर ओक!" अन्ना ने विस्मय से कहा. वो श्रद्धा के साथ धीरे-धीरे पेड़ के पास गईं और उसकी चमकती शाखों के नीचे आकर रुकीं.

अपनी टीचर के हृदय में उथल-पुथल से अनभिज्ञ सवुस्किन पेड़ के तने के नीचे अपने काम में व्यस्त रहा. वो उस शानदार दरख़्त के साथ एक पुराने दोस्त जैसा सलूक कर रहा था.

"अन्ना वासिलिवेना, ज़रा यहाँ आएं," उनेके बुलाया, "ज़रा यहाँ देखें."

उसके मिट्टी,और स्नो से लिपटे एक ढेले को धकेला. उसके नीचे सूखी घास चिपकी थी. वहां एक कोटर में सड़ी पत्तियों से लदी एक छोटी गेंद पड़ी थी. सूखी पत्तियों के अवशेषों में नुकीली सुइयें चुभी हुई थीं.

"साही!" ख़ुशी से अन्ना चिल्लाईं.

"ज़रा देखें, उसने खुद को कितनी अच्छी तरह से छिपाया है?" और फिर सवुस्किन ने स्थिर साही को मिट्टी, घास और स्नो के लिहाफ से वापिस ढक दिया. फिर उसने एक अन्य स्थान पर खुदाई

की. वहां एक गुफा थी जिसके मुहाने से हिमलम्ब बर्फ के लम्बे तारों लटक रहे थे. वो गुफा एक भूरे मेंढक का घर थी. मेंढक की तनी त्वचा, प्रकाश में दमक रही थी.

"क्या वो चालाक नहीं है?" सवुस्किन ने टिप्पणी की. "वो मेंढक मरे होने का नाटक कर रहा है. लेकिन सूरज की किरणों से थोड़ा गर्म होने के बाद वो एक ऊंची छलांग लगाएगा."

सवुस्किन ने अन्ना को उस नायाब दुनिया की एक झलक दिखाई जिससे वो चिरपरिचित था. उस बाँझ के पेड़ में अनेकों अन्य किरायेदार भी रहते थे - कीड़े-मकोड़े, छिपकलियां, इल्लियां आदि. कुछ पेड़ की जड़ो में छिपे थे तो कुछ उसकी छाल में. पतले-दुबले, मुरझाए हुए और देखने में मृत वो पूरी सर्दी भर शीतनिद्रा में वहां सोते रहते थे. वो शक्तिशाली पेड़ एक महत्वपूर्ण गर्मी का भंडार थे, और वे प्राणी उससे बेहतर किसी अन्य आश्रय की उम्मीद नहीं कर सकते थे. मंत्रमुग्ध होकर अन्ना ने जादुई जंगल के उन करिश्मों को निहारा, जिसके बारे में वो बहुत कम ही जानती थीं.

"अरे हाँ, अब तक माँ अपने काम पर आ चुकी होंगी," सवुस्किन ने चिंता की आवाज़ में कहा.

अन्ना ने अपनी घड़ी पर एक नज़र डाली. सवा-तीन बज चुके थे. वो खुद को फँसी हुई महसूस कर रही थीं. अपनी मानवीय कमज़ोरियों पर शर्मिंदा होकर और मन-ही-मन ओक - बाँझ के पेड़ से माफ़ी मांगते हुए उन्होंने कहा, "ठीक है, सवुस्किन, इससे केवल यह साबित होता है कि शॉर्टकट चुनना हमेशा सबसे अच्छा तरीका नहीं होता है. अब से तुम राजमार्ग लेकर ही स्कूल आना."

सवुस्किन ने नीचे की ओर देखा और कोई उत्तर नहीं दिया.

हे भगवान! अन्ना ने सोचा, क्या यह मेरे अयोग्य होने का स्पष्ट प्रमाण नहीं है!

उन्होंने सुबह जो पाठ पढ़ाया था वो उनके दिमाग में घूमने लगा. उसकी परिभाषायें कितनी नीरस और बेजान थीं, और भावनाओं से कितनी विहीन थीं. और तब वो बच्चों को उनकी मूल भाषा सिखा रही थीं, जो इतनी सुंदर थी, और रंगों और अर्थों से इतनी समृद्ध थी! क्या वो वास्तव में एक विवेकशील और अनुभवी टीचर थीं? उन्होंने उस रास्ते पर अभी कुछ लड़खड़ाते हुए कदम ही रखे थे जिसे तय करने में शायद उनका पूरा जीवन बीत जाए. और फिर भटके बिना वो सही रास्ते पर कैसे आ सकती थीं? पर जिस खुशी के साथ उनके विद्यार्थियों ने चिर परिचित शब्द चिल्लाए थे, वो एक ऐसी खुशी थे जिसे उन्होंने पूरी तरह से सराहा या साझा नहीं किया था. अन्ना को इस बात का भी सही अंदाज़ हुआ कि वो अभी तक निराशाजनक रूप से भटकी नहीं थीं.

"इस प्यारी सैर के लिए तुम्हारा धन्यवाद, सवुस्किन," अन्ना ने कहा. "मैंने अभी-अभी तुम से वो कहा था वो असल में मेरा मतलब नहीं था. बेशक तुम स्कूल आने के लिए जंगल का रास्ता चुन सकते हो."

"धन्यवाद, अन्ना वासिलिवेना." सवुश्किन ख़ुशी के मारे शरमा गया. वो उसी समय अपनी टीचर से वादा करना चाहता था कि वो आइंदा से स्कूल आने में फिर कभी देरी नहीं करेगा, लेकिन वो झिझक रहा था, क्योंकि उसे डर था कि वो अपना वादा पूरा नहीं कर पाएगा. उसने केवल अपना कॉलर उठाया और अपनी टोपी नीचे खींचते हुए कहा, "मैं आपको स्कूल वापस छोड़ दूंगा."

"नहीं, तुम वो नहीं करोगे, मैं खुद ही अपना रास्ता ढूंढ लूंगी."

सवुस्किन ने टीचर को कुछ संदेह से देखा. फिर उसने एक लंबी छड़ी उठाई, उसका पतला सिरा तोड़ा और उसे अन्ना को थमाया. "यह लें," उसने कहा. "यदि कोई बारहसिंघा आपके रास्ते में आए, तो आप उसे बस इस छड़ी से पीठ पर मारें और वो अपनी दुम दबाकर वहां से भाग जाएगा. हालांकि उससे भी बेहतर यह होगा कि आप उसे न मारें, बस उसकी ओर छड़ी लहराएं. क्योंकि अगर बारहसिंघा नाराज़ हो गया तो आपको पता है, वो जंगल छोड़कर जा सकता है."

"चिंता मत करो, मैं उसे नहीं मारूंगी," टीचर ने वादा किया.

फिर वो कुछ कदम पीछे हटीं, फिर रुकीं और 'विंटर ओक' पेड़ पर एक आखिरी नज़र डालने के लिए मुड़ीं, जो डूबते सूरज के गुलाबी रंग में रंग गया था. उस विशाल पेड़ के नीचे एक छोटी सी काली आकृति खड़ी थी. सवुश्किन घर नहीं गया था. दूर से ही सही, लेकिन वो अपनी टीचर के मार्ग की रक्षा करने के लिए वहीं रुका था.

और फिर अचानक अन्ना को पता चला कि उस जंगल में सबसे अद्भुत प्राणी वो 'विंटर ओक' (शीतकालीन ओक) नहीं था, बल्कि टूटे-फूटे जूते और पैबंद लगे कपड़े पहने वो छोटा लड़का था, जो एक "शॉवर नर्स" का बेटा और युद्ध में मारे गए एक देशभक्त सैनिक का बेटा था.

अन्ना ने उसकी ओर हाथ हिलाया और फिर वो अपने रास्ते चली गईं.

हिंदी अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

14.07.2023